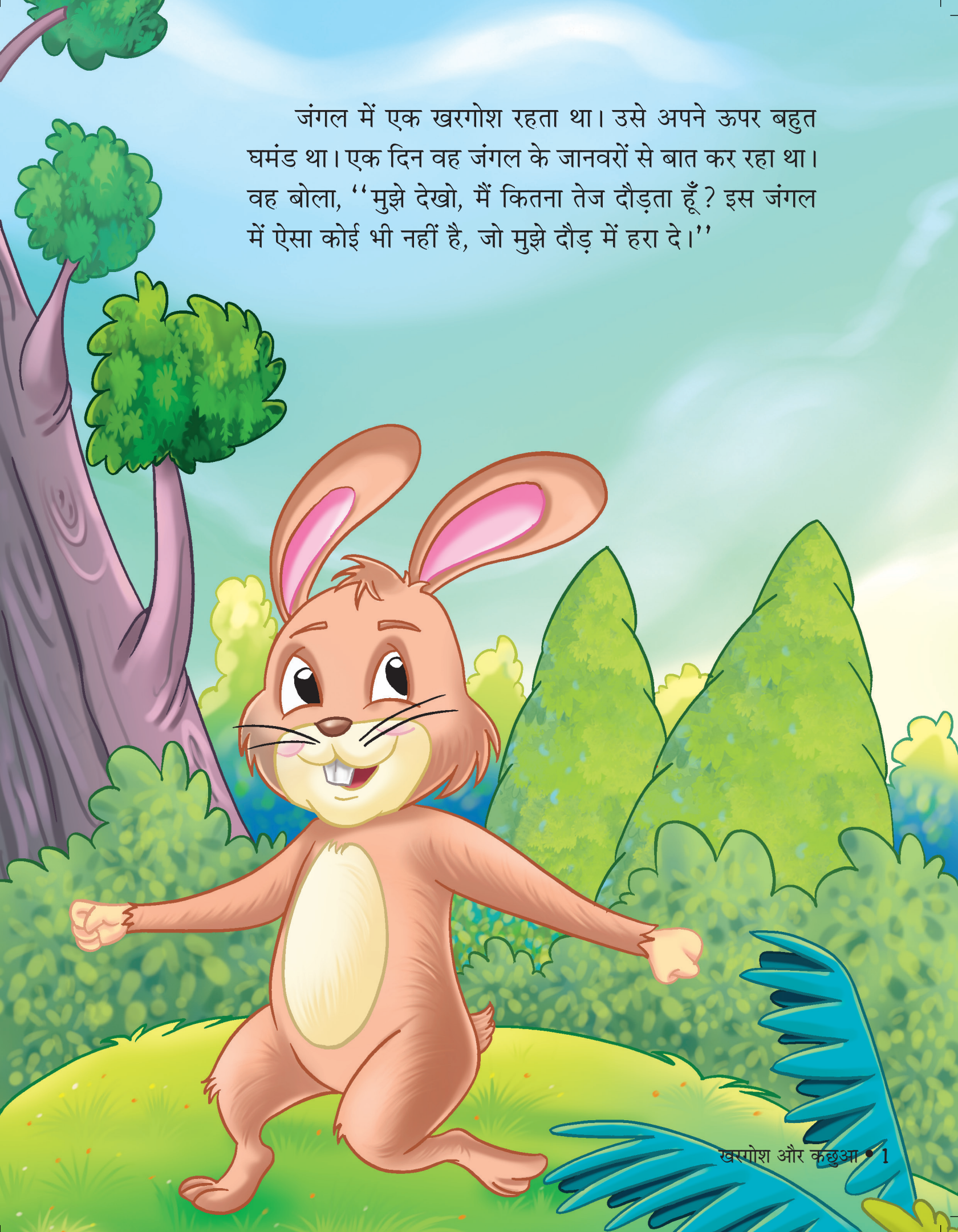

जंगल में एक खरगोश रहता था। उसे अपने ऊपर बहुत घमंड था। एक दिन वह जंगल के जानवरों से बात कर रहा था। वह बोला, ''मुझे देखो, मैं कितना तेज दौड़ता हूँ? इस जंगल में ऐसा कोई भी नहीं है, जो मुझे दौड़ में हरा दे।''

कुछ देर के बाद खरगोश एक कछुए से मिला। कछुआ धीरे-धीरे पानी से निकलकर बाहर आ रहा था। खरगोश उसे देखकर हँसने लगा। खरगोश बोला, ''तुम कितने सुस्त हो?'' खरगोश की बात सुनकर कछुए को बेइज्जती महसूस हुई तो उसने जवाब दिया, ''माना कि मैं सुस्त हूँ, लेकिन इसके साथ-साथ मैं धुन का पक्का भी हूँ।'' खरगोश शेखी बघारते हुए बोला, ''ओह सचमुच! मैं जानता हूँ, इस जंगल में ऐसा कोई भी नहीं है, जो मुझसे तेज दौड़ सके।''

खरगोश कछुए के पीछे खड़ा हो गया और बोला, ''तो फिर ठीक है, चलो हम दोनों के बीच दौड़ का एक मुकाबला हो जाए।'' कछुआ गर्व महसूस करते हुए बोला, ''क्या तुम सच कह रहे हो?'' उसका जवाब सुनकर खरगोश हँसते हुए बोला, ''तुम्हें क्या लगता है कि तुम अपनी सुस्त चाल से मुझे हरा दोगे?'' कछुए ने जवाब दिया, ''हाँ, मैं तुम्हारी चुनौती को स्वीकार करता हूँ।''

''तो फिर ठीक है, अब हम दोनों के बीच एक मुकाबला हो ही जाए।'' खरगोश बोला।

खरगोश और कछुए के बीच होनेवाली दौड़ की खबर जंगल में आग की तरह फैल गई। चूहे ने इसके बारे में गिलहरी को बताया, गिलहरी ने यह खबर हिरण को दी और हिरण ने इस बारे में बंदर को बताया। इस तरह से यह खबर एक-दूसरे के माध्यम से जंगल के सारे जानवरों तक पहुँच गई कि कछुए और खरगोश के बीच दौड़ होने वाली है।

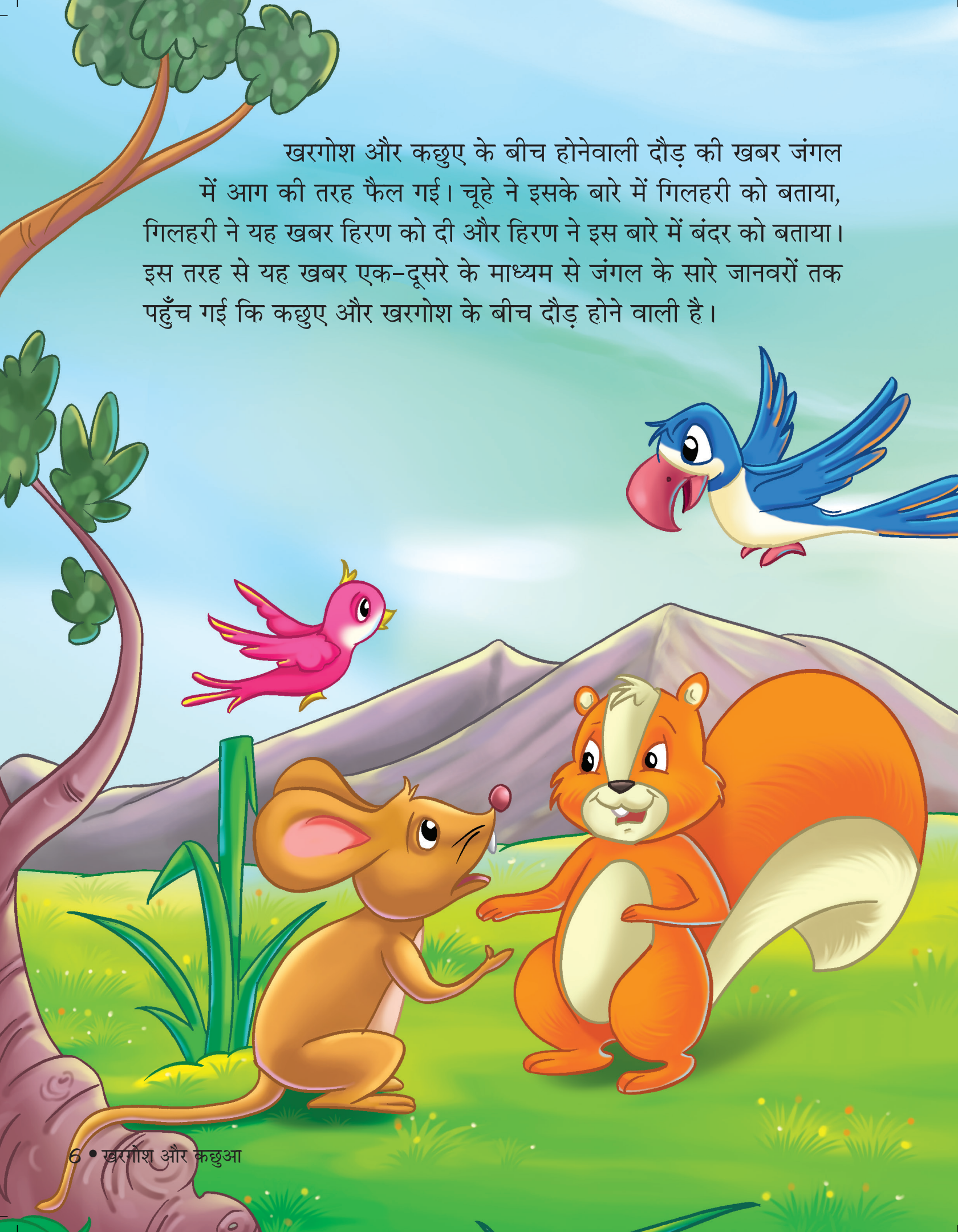

यह सुनकर जंगल के सब जानवर हैरान रह गए, क्योंकि वे सब जानते थे कि कछुआ बहुत धीरे चलता है और वह अपनी धीमी चाल से खरगोश को नहीं हरा सकता। लेकिन जंगल के सभी जानवर घमंडी खरगोश को मजा चखाना चाहते थे, इसलिए वे सभी निश्चित दिन दौड़ वाली जगह पर कछुए को प्रोत्साहित करने के लिए पहुँच गए। जंगल के सभी जानवर कछुए के पक्ष में थे। वे सभी चाहते थे कि इस दौड़ को कछुआ ही जीते।

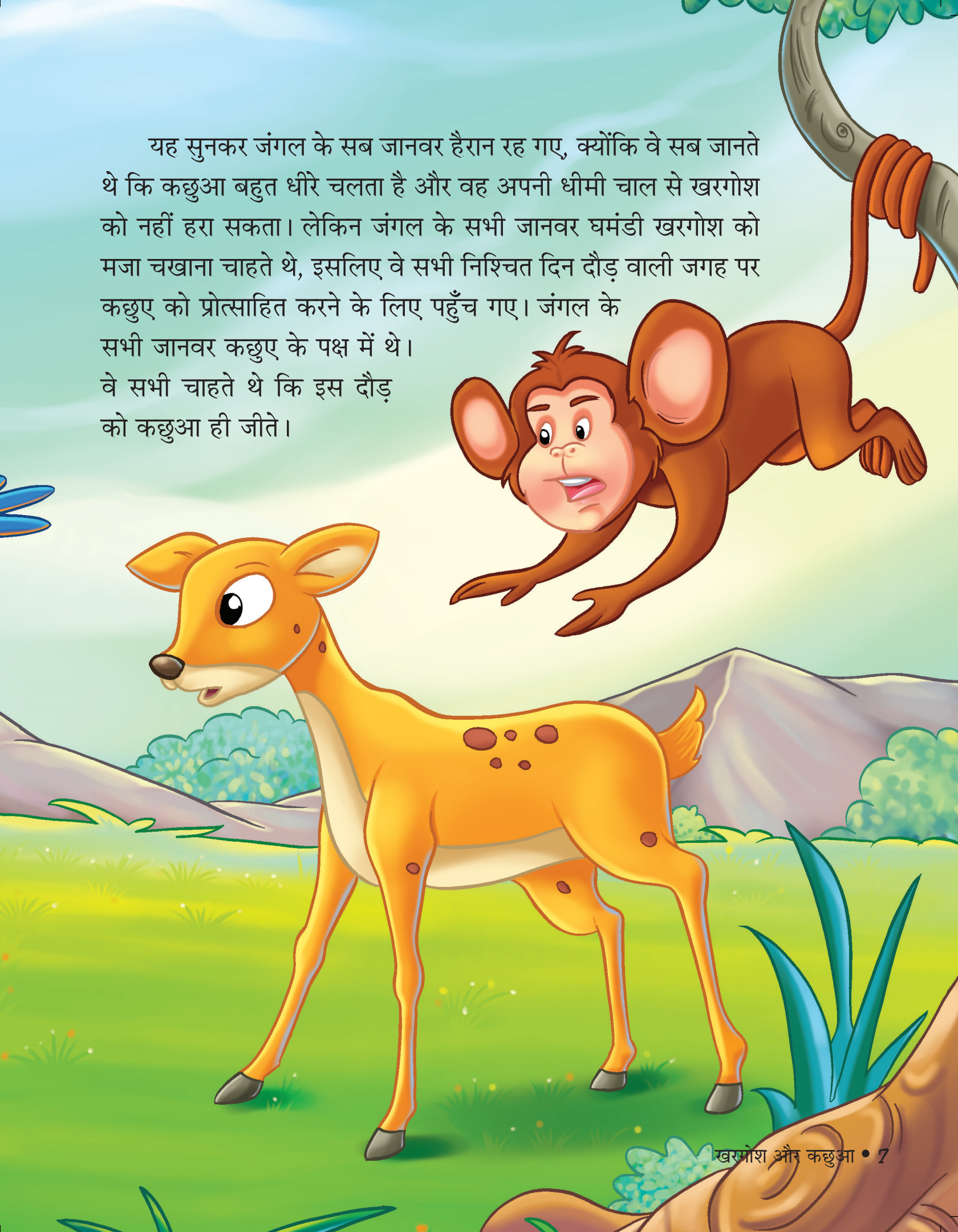

अब कछुआ और खरगोश, दोनों दौड़ की जगह पर मौजूद थे। सभी जानवरों को वहाँ उपस्थित देखकर कछुआ और खरगोश हैरान रह गए। सभी जानवरों ने चिल्लाना शुरू कर दिया, ''कछुए, हम सब तुम्हारे साथ हैं।'' यह सब सुनकर खरगोश आश्चर्यचकित रह गया। फिर भी उसने कहना शुरू किया, ''तुम सब मूर्ख हो, क्योंकि तुम सब एक हारने वाले के पक्ष में हो। मैं तुम लोगों को दिखा दूँगा कि इस जंगल में मैं ही सबसे तेज दौड़नेवाला जानवर हूँ।''

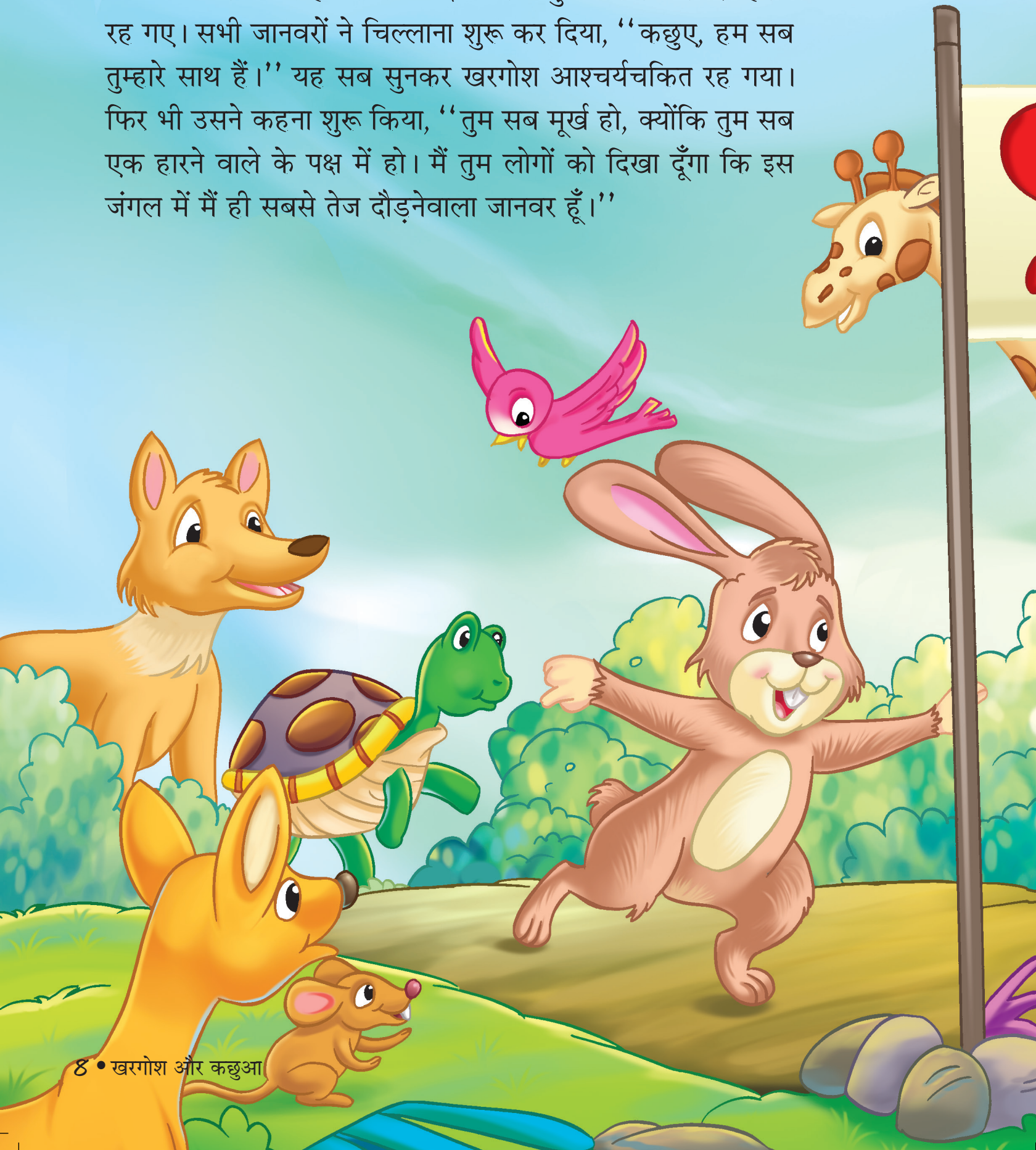

अंततः कछुआ और खरगोश उस रेखा पर खड़े हो गए, जहाँ से दौड़ शुरू होनी थी। सभी जानवर एक साथ जोर से चिल्लाए, ''चलो, अब तुम दोनों दौड़ शुरू करो।''

खरगोश ने तुरंत ही जितनी तेजी से दौड़ सकता था, दौड़ना शुरू कर दिया। कुछ ही मिनटों में उसने जितनी दूरी दौड़ जीतने के लिए तय करनी थी, उसकी आधी पार कर ली। फिर उसने पीछे मुड़कर देखा कि कछुआ अभी शुरुआती लाइन से थोड़ा-सा ही आगे बढ़ा है। 'कछुए को यहाँ तक पहुँचने में बहुत समय लगेगा,' ऐसा सोचकर खरगोश ने एक छोटी-सी झपकी लेने की सोची और वह सो गया। लेकिन कछुआ लगातार चलता रहा और धीरे-धीरे उसने आधा रास्ता पार कर लिया। वह उस जगह से भी आगे बढ़ गया, जहाँ पर खरगोश सोया हुआ था।

Z
Z
Z

धीरे-धीरे चलता हुआ कछुआ दौड़ खत्म होने वाली जगह के पास पहुँच गया। अचानक से खरगोश उठा और उसने, जहाँ से दौड़ शुरू हुई थी, उस स्थान की ओर देखा। वह आश्चर्यचकित रह गया, क्योंकि वहाँ पर उसे कछुआ नजर नहीं आया। फिर उसने आगे मुड़कर जिस स्थान पर दौड़ खत्म होनी थी, वहाँ देखा तो कछुआ दौड़ खत्म होनेवाली जगह तक पहुँचने ही वाला था।

अब खरगोश को चिंता हुई और वह जितनी तेजी से दौड़ सकता था, दौड़ने लगा। लेकिन जब तक खरगोश दौड़ खत्म होनेवाली जगह तक पहुँचता, उससे पहले ही कछुआ वहाँ तक पहुँच चुका था।

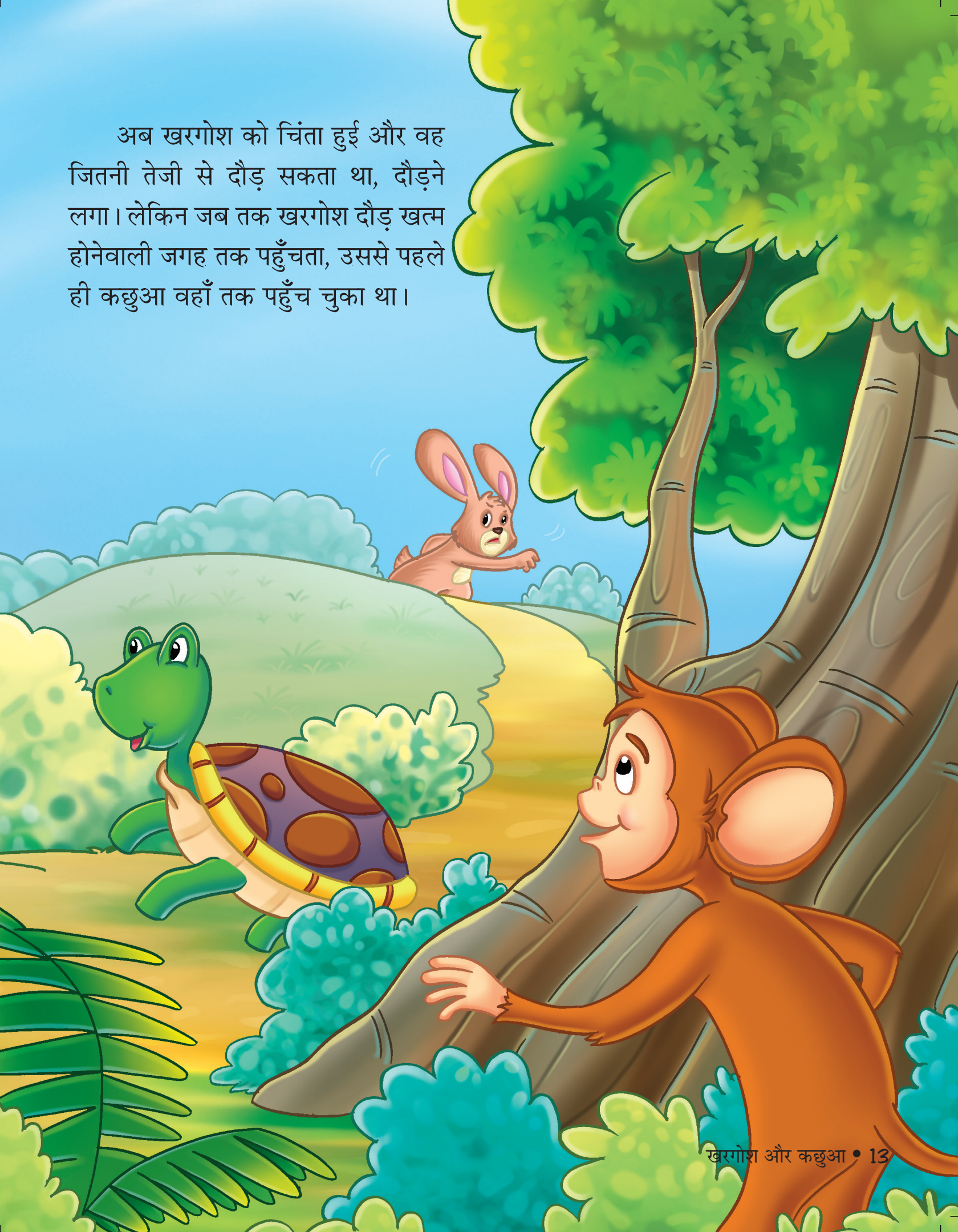

फिर क्या था? कछुए ने दौड़ जीत ली थी। सभी जानवर बहुत खुश थे। सभी ने कछुए को बधाई दी। कछुआ भी इस बात से बहुत खुश था कि उसने तेज दौड़नेवाले घमंडी खरगोश को हरा दिया।

सभी जानवर खरगोश पर हँसने लगे, क्योंकि वह भी हमेशा इसी तरह से दूसरों पर हँसता था। शर्मिंदा हुआ खरगोश चुपचाप सिर नीचा किए उन्हें हँसते हुए देखता रहा।

अंत में खरगोश ने सबसे माफी माँगते हुए कहा, ''मुझे इतनी शेखी नहीं बघारनी चाहिए थी। यह मेरी गलती है। अब से मैं कभी अपनी योग्यता पर घमंड नहीं करूँगा और न ही दूसरों की कमियों पर कभी हँसूँगा।'' फिर खरगोश ने सभी जानवरों के साथ मिलकर कछुए की जीत का जश्न मनाया।